दिल्ली, नोएडा, साहिबाबाद, मुरादनगर, मोदीनगर, लोनी, मेरठ, हापुड़ से एक साथ प्रसारित

विशेष खबर

हर खबर की रखे खबर

विशेष खबर visheshkhabar

• वर्ष: • 2 अंक: 15
पृष्ठ : 8
गाजियाबाद
01 से 15 दिसंबर-2019
मूल्य: 10 रुपये
पाक्षिक समाचार पत्र

visheshkhabarvk@gmail.com
RNI: UPHIN/2017/74151

पेज-02 महाराष्ट्र में बीजेपी से कहां हुई चूक

अन्दर के पेजों पर
3 केजरीवाल के मंत्री ने कहा, दाह संस्कार से बढ़ रहा प्रदूषण
4 स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 में क्या गाजियाबाद फिर बनेगा नंबर वन
5 आरएसएस की विंग सक्षम ने दिव्यांगों के लिए किया दौड़ का आयोजन
8 गाजियाबाद में बीजेपी के दिनेश सिंघल जिलाध्यिक्ष, संजीव शर्मा महानगर अध्यक्ष बने

असली इंसाफ

हैदराबाद के हैवानों को मिला हैवानियत का अंजाम

- देश में पहली बार हुआ ऐसा इंसाफ, पीड़ित युवती के पिता ने जताई खुशी
- गैंग रेप के तमाम आरोपियों को ऐसी ही सजा की मांग

विशेष संवाददाता

तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में वेटनरी डॉक्टर के गैंगरेप और मर्डर के 10 दिन बाद चारों आरोपी पुलिस एनकाउंटर में मारे जाने की घटना देश के लिए एक उदाहरण बन सकती है। हो सकता है कि कुछ मानवाधिकारी इस एनकाउंटर सवाल उठाएं। लेकिन देश का एक बड़ा तबका इसे ह्यटिट फॉर टैटह्न बताकर दुष्कर्म करने वाले हर आरोपी को ऐसी ही सजा देने के लिए लामबंद हो रहा है। देश में सामूहिक दुष्कर्म के आरोपियों को पहली बार मिली ऐसी सजा मिलने के बाद पूरे देश में खुशी का माहौल है। पुलिस की इस कार्रवाई को पूरे देश से व्या पक जन समर्थन मिल रहा है। लोग चाहते हैं कि देश भर में पुलिस रेपिस्टों के खिलाफ ऐसी ही कार्रवाई करें।

क्या है पूरा मामला?

दरअसल, 29 नवंबर को हैदराबाद के साइबराबाद टोल प्लाजा के पास एक महिला की अधजली लाश मिली थी। 26 वर्षीयमहिला की पहचान एक वेटनरी डॉक्टर के तौर पर हुई है। पुलिस के मुताबिक, महिला की गैंगरेप के बाद हत्या की गई, फिर लाश को पेट्रोल से जलाकर फ्लाईओवर के नीचे फेंक दिया गया। वारदात में शामिल चारों आरोपियों की पहचान मोहम्मद आरिफ, नवीन, चिंताकुंता केशावुलु और शिवा के तौर पर हुई । पुलिस जांच में पता चला कि आरोपियों ने वारदात को अंजाम देने के लिए साजिश के तहत महिला डॉक्टर की स्कूटी पंक्चर की थी, ताकि वे महिला डॉक्टेर को अपने जाल में फंसाकर वारदात को अंजाम दे सके।

पुलिस का कहना है कि चारों आरोपियों ने महिला डॉक्टर को टोल प्लाजा पर स्कूटी पार्क करते देखा था। शिवा स्कूटी ठीक कराने के बहाने वे महिला डॉक्टर को कुछ दूर ले गऐ, जहां आरोपियों ने उसे बंधक बना लिया और जबरन महिला डॉक्टर को भी जबरन शराब पिलाकर उसके मुंह हाथ से बंद दिए। चारों आरोपियों ने बारी-बारी से महिला डॉक्टर से रेप किया. माना जा रहा है कि सांस नहीं ले पाने के कारण महिला डॉक्टर का दम घुट गया और मौत हो गई।

देशभर में उबाल

इस वहशियाना वारदात के बाद देश में नारी सुरक्षा को लेकर फिर से जबर्दस्ते बहस छिड़ गई थी। संसद से लेकर सड़क तक लोगों ने अपना आक्रोश व्यसक्त? किया लोग गुस्से में थे। महिलाओं की सुरक्षा को लेकर लोगों ने व्येवस्था् और सरकारों पर तीखे सवाल दागे, इसे सड़ांध से भरा बताया और जिम्मेदारों से पूछा कि निर्भया जैसी जघन्य तम वारदात के बाद भी देश में कुछ नहीं बदला तो आखिर हम कहां जा रहे हैं। मामला संवेदनशील हो गया और सोशल मीडिया के आक्रोश ने जनआंदोलन का रूप ले लिया। हैदराबाद की इस वीभत्सल घटना के बाद देश भर में हो रहे विरोध प्रर्दशनों और लोगों का आक्रोश काम आया जिसके चलते पुलिस ने चारों आरोपियों को 48 घंटे के भीतर गिरफ्तार कर लिया। सरकार ने त्तयकाल इस केस की सुनवाई के लिए एक फास्ट8ट्रैक कोर्ट बनाने का ऐलान कर दिया। आरोपियों चौतरफा फांसी देने की मांग भी उठने लगी। हैदराबाद में वकीलों ने इन आरोपियों का मुकदमा तक न लड़ने का ऐलान कर दिया था।

इसी दौरान पुलिस अपनी जांच को अंजाम तक पहुंचाने तथा आरोपियों के खिलाफ पुख्ताठ सबूत एकत्र करने के लिए 6 दिसंबर की रात को चारों आरोपियों को मौका-ए-वारदात पर क्राइम घटना का सीन दोहराने के लिए ले गई थी ।हैदराबाद के पुलिस कमिश्नर वी.सी सज्जनार ने बताया कि सुबह करीब 3 बजे घटना को रीक्रिएट करने के दौरान आरोपी पुलिस से हथियार छीनकर कर फायरिंग करते हुए भागने लगे। आत्मरक्षा में पुलिस ने जवाबी फायरिंग की, जिसमें गैंगरेप और मर्डर के चारों आरोपी मोहम्मद आरिफ, नवीन, शिवा और चेन्नाकेशवुलु मारे गए हैं। इसघटना में दो पुलिसकर्मी भी घायल हुए। ये एनकाउंटर ठीक उस जगह हुआ जहां महिला चिकित्साक का दुष्कार्म के बाद जला हुआ शव बरामद हुआ था।

बलात्कारियों का एनकाउंटर बनेगा नजीर

एनकाउंटर की खबर मिलने के बाद पीड़ित के पिता ने कहा, 'हमारी बच्ची को मरे हुए 10 दिन हो गए। तेलंगाना सरकार, पुलिस और जो लोग मेरे साथ खड़े थे, उन्हें बधाई। मुझे लगता है कि पुलिस ने काफी अच्छा काम किया। अगर अपराधी भाग जाते, तो सवाल उठता कि पुलिस ने उन्हें कैसे भागने दिया। उन्हें दोबारा पकड़ना भी मुश्किल होता। अगर उन्हें दोबारा पकड़ भी लिया जाता, तो आगे सजा देने की कार्रवाई में काफी समय लग जाता।' वहीं, पीड़िता की बहन ने कहा कि आरोपी एनकाउंटर में मारे गए। मैं इससे काफी खुश हूं। यह एक उदाहरण होगा, उम्मीद है आगे से ऐसा कुछ नहीं होगा। मैं पुलिस और तेलंगाना सरकार को शुक्रिया कहना चाहती हूं।

हैदराबाद की बेटी के गुनाहगारों को पुलिस की गोली से मृत्यु दंड की जानकारी के बाद पूरे देश में लोग खुशी मना रहे हैं। पुलिस को बधाई दी जा रही है। लोग इसे असली इंसाफ बता रहे हैं। लेकिन वहीं राजनीति से लेकर मानवाधिकार की गतिविधियों से जुड़े लोग इस एनकाउंटर के तरीके पर सवाल उठाते हुए जांच की मांग कर रहे है।

सुप्रीम कोर्ट की वकील वृंदा ग्रोवर ने पुलिस पर मुकदमा दर्ज करने की मांग की है, उन्होंने कहा कि पुलिस पर मुकदमा दर्ज किया जानिए और पूरे मामले की स्वतंत्र न्यायिक जांच कराई जानी चाहिए। महिला के नाम पर कोई भी पुलिस एनकाउंटर करना गलत है।

राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने कहा, 'हमारी मांग थी कि आरोपियों को फांसी की सजा मिले, लेकिन कानूनी प्रक्रिया के तहत। हम चाहते थे कि त्वरित न्याय हो। पूरी कानूनी प्रक्रिया के तहत ही कार्रवाई होनी चाहिए। लोग आज एनकाउंटर से खुश हैं, लेकिन हमारा संविधान है, कानूनी प्रक्रिया है।'

पूर्व केंद्रीय मंत्री और भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) सांसद मेनका गांधी ने हैदराबाद एनकाउंटर पर सवाल उठाया है। मेनका गांधी ने कहा कि हैदराबाद में जो हुआ वह सही नहीं है। एनकाउंटर इसका सॉल्यूशन नहीं है। आरोपियों को एक न्यायिक प्रक्रिया के तहत सजा मिलनी चाहिए।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सीधे सवाल न उठाते हुए कहा हैदराबाद में जो हुआ उससे जस्टिस सिस्टम पर भी सवाल खड़े होते हैं, लोगों का एजेंसियों से भरोसा उठ गया है। ऐसे में समाज को चिंतन करना होगा और सरकारों को एक्शन लेना होगा।

एमपी के पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने ट्विट किया- ह्यहैदराबाद में नरपिशाचों को उनके पाप की सजा मिली। पूरे देश को बड़ा सुकून मिला। दुष्टों के साथ यही व्यवहार होना चाहिए।'

संपादकीय

महाराष्ट्र में बीजेपी से कहां हुई चूक

महाराष्ट्र की राजनीति के पल-पल बदलते घटनाक्रम ने कम से कम ये तो साबित कर ही दिया था कि राजनीति में कभी भी कुछ भी हो सकता है। लेकिन सवाल ये उठता है कि गोवा, मणिपुर और हरियाणा में सरकार बना लेने वाली बीजेपी से आखिर चूक कहां हुई। अजित पवार के साथ मिलकर जो बीजेपी ने किया उससे पार्टी ने अपनी प्रतिष्ठा खो दी है। साथ ही अमित शाह की जो छवि बनी थी कि वो बहुत बड़े चाणक्य हैं, रणनीतिकार हैं, कभी फेल नहीं होते है, वो छवि भी टूट गई।

विनीतकांत पाराशर

महाराष्ट्र में पिछले दिनों हुआ राजनीतिक घटनाक्रम साल 2019 का सबसे बड़ा राजनीतिक उलटफेर हुआ है। पहले उम्मीरद थी कि बीजेपी और शिवसेना अपने गठबंधन के साथ बहुमत के आधार पर सरकार बनाऐंगे। लेकिन सेना ने ढाई साल के लिए मुख्यघमंत्री पद की दावेदारी ठोककर बीजेपी की उम्मी दों पर पानी फेर दिया। इसके बाद शिवसेना एनसीपी और कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाने के खेल में जुट गई। बातचीत फाइनल भी हो गई। लेकिन अचानक पासा पलट गया। शिवसेना का मंसूबा पूरा होता उससे पहले आधी रात को बीजेपी ने शरद पवार के भतीजे अजित पवार को अपने पाले में लाकर बाजी पलट दी और फडणवीस ने मुख्यपमंत्री पदद की शपथ लेकर अजीत को उप मुख्येमंत्री बना दिया।

इस सियासी घटनाक्रम का पटाक्षेप यहीं पर नहीं हुआ। मामला सर्वोच्चप अदालत की दहलीज पर पहुंचा और उसके बाद तेजी से घटनाक्रम कुछ ऐसे बदला कि अजीत पवार डिपटी सीएम पद से इस्तीफा देकर वापस चाचा के खेमे में पहुंच गए। निराश और हताश फडणवीस ने भी आखिर विधानसभा के पटल पर बहुमत साबित करने की बजाय इस्तीशफा दे दिया। इसके बाद अंततः शिवसेना ने एनसीपी और कांग्रेस के साथ मिलकर महाराष्ट्रइ में सरकार बनाई।

महाराष्ट्र की राजनीति के पल-पल बदलते घटनाक्रम ने कम से कम ये तो साबित कर ही दिया था कि राजनीति में कभी भी कुछ भी हो सकता है। लेकिन सवाल ये उठता है कि गोवा, मणिपुर और हरियाणा में सरकार बना लेने वाली बीजेपी से आखिर चूक कहां हुई। चुनाव के नतीजे आने के बाद ये बात सबको पता थी कि जनादेश बीजेपी और शिवसेना को मिला था। लेकिन जब शिवसेना पीछे हट गई तो बीजेपी ने अपनी तरफ से कोई कदम नहीं उठाया और उसने सीधा राज्यपाल से जा कर कह दिया कि वो सरकार बनाने की स्थिति में नहीं है।

इसके बाद बीजेपी को लेकर पूरे देश में और महाराष्ट्र में एक सहानुभूति थी कि पार्टी का व्यवहार सम्मानजनक रहा है, लेकिन अजित पवार के साथ मिलकर जो बीजेपी ने किया उससे उसने वो सहानुभूति और प्रतिष्ठा खो दी है। साथ ही अमित शाह की जो छवि बनी थी कि वो बहुत बड़े चाणक्य हैं, रणनीतिकार हैं, कभी फेल नहीं होते है, वो छवि भी टूट गई। बीजेपी का हाल कुछ ऐसा है कि रन खुदा ही मिला न विसाले सनमर यानी वो न इधर के रहे न उधर के रहे। उसे हासिल कुछ नहीं हुआ लेकिन नुकसान काफी कुछ हुआ है। इसकी भरपाई बहुत जल्दी नहीं हो सकेगी।

महाराष्ट्र को लेकर बीजेपी से पहली गलती हुई, जब विधानसभा चुनाव के दौरान एनसीपी प्रमुख शरद पवार के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय का नोटिस गया था। शरद पवार की एनसीपी ऐसी पार्टी थी जो महाराष्ट्र में बफर की तरह काम कर रही थी। जब शिवसेना का दबाव होता था तो एनसीपी, बीजेपी की मदद के लिए आ जाती थी। 2014 में जब बीजेपी के लिए बहुमत साबित करने की बारी थी तो एनसीपी ने ही उन्हें बाहर से समर्थन दिया था। यहां से दोनों दलों में दरार पड गई।

दूसरी गलती के रूप में बीजेपी ने अजित पवार के रूप में एक ऐसे व्यक्ति पर भरोसा करके दूसरी गलती कि जिसको वो पांच साल से भ्रष्टाचारी बता कर, उसके खिलाफ जांच शुरू करके ये बताते रहे कि इनसे बड़ा भ्रष्टाचारी कोई नहीं होगा। उन्होंने उसी अजीत पवार की एक ऐसी चिट्ठी पर भरोसा कर लिया जो एक तरह से चोरी कर के लाई गई थी। राज्यह के नेताओं को इस बात की भनक थी कि अजित के पास प्रर्याप्तच विधायकों का सर्मथन नहीं है। फिर भी उन्होंओने ये जोखिम लिया। पार्टी के पास कोई प्लान बी नहीं था। अजित पवार जितने विधायकों को लाने का दावा कर रहे हैं, उन्हें न ला पाए तो उस स्थिति में क्या करेंगे इसकी कोई तैयारी नहीं थी। एक बड़ी गलती शरद पवार और अजित पवार के रिश्तों को समझने में भी हुई। ये दोनों एक परिवार के लोग हैं। बीजेपी ने ये आकलन कर लिया था कि सत्ता में आने की कोशिश में ये परिवार टूट जाएगा। बीजेपी ने चौथी गलती शरद पवार की ताकत को कम आंकने की कर ली। विधानसभा चुनाव से पहले शरद पवार के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय का नोटिस आने के बाद जिस तरह उन्होंने पलटवार किया उसके बाद बीजेपी को कम से कम 15-20 सीटों का नुकसान हुआ। महाराष्ट्र में, खास कर मराठा राजनीति में शरद पवार अभी भी बड़े नता हैं। इसमें कोई विवाद नहीं है और ये शरद पवार ने पूरी तरह साबित भी कर दिया। लेकिन बीजेपी ये बात नहीं समझ पाई। बीजेपी की पांचवी गलती ये थी कि उसने धैर्य खो दिया और राज्य में सरकार गठन के मामले में प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को शामिल कर कर लिया। अगर ये काम सामान्य तरीके से होता, कैबिनेट की बैठक होती, उसमें राष्ट्रपति शासन वापस लेने का फैसला होता और और फिर शपथ ग्रहण होता तो शायद पार्टी की उतनी बदनामी न होती। शायद सामान्य तरीके से सब कुछ होता को मामला सुप्रीम कोर्ट तक भी नहीं जाता। कोर्ट में एनसीपी, कांग्रेस और शिवसेना का यही कहना था सरकार को गलत तरीके से शपथ दिलाई गई है, इसे बर्खास्त कया जाए।

बीजेपी की गलतियों ने शिवसेना, कांग्रेस व एनसीपी को भरपूर मौका दिया कि वो अपने आपसी मतभेद मिटा कर साथ आएं और उनसे लड़ें। उनके पास इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा था कि वो अपने सारे मतभेद भुला दें और एक हो जाएं, क्योंकि उनसे अस्तित्व पर ही अब सवाल खड़ा हो गया था। अब ये भी सवाल उठ रहे हैं कि महाराष्ट्र में बीजेपी के साथ जो कुछ हुआ उसके लिए देवेंद्र फडणवीस अकेले ज़िम्मेदार हैं या उसके लिए राष्ट्रीय नेतृत्व भी ज़िम्मेदार है। अगर आप शिवसेना, कांग्रेस और एनसीपी की सरकार को बनने देते तो ये सरकार अपने अंदरूनी मतभेदों के कारण गिर जाती और बीजेपी के लिए बेहतर स्थिति होती। दोबारा चुनाव होते तब भी भाजपा के लिए बेहतर होता और अगर चुनाव न भी होते तो भी बीजेपी को लाभ होता। लेकिन अभी जो कुछ हुआ उससे बीजेपी को केवल नुकसान ही नुकसान है। देवेंद्र फडणवीस की छवि को इसमें बहुत बड़ा नुकसान है क्योंकि वो एक ऐसे नेता के रूप में उभर रहे थे जिन्हें महाराष्ट्र से भविष्य के संभावित प्रधानमंत्री के रूप में देखा जा रहा था।

चितंन: बुजुर्गों की फिक्र में सरकार

सुनील वर्मा

समाज में बुजुर्गों के जीवन में मुश्किलों को कम करने के मकसद से लंबे समय से कवायदें चल रही हैं, लेकिन आज भी वे व्यावहारिक स्वरूप नहीं ले सकी हैं। इस मामले में समय-समय पर कई तरह के कानूनी प्रावधान किए गए, जिनके तहत बेटे-बेटियों से लेकर दूसरे संबंधों की भी जिम्मेदारियां तय की गई हैं। लेकिन आमतौर पर व्यवहार में उनके पालन को लेकर कई जगह लापरवाही देखी जाती है। इसके अलावा, कुछ सामाजिक संबंध ऐसे भी हैं, जो खुद को मौजूदा कानूनी प्रावधानों के दायरे से बाहर मानते हैं। हालांकि अब इस दिशा में भी कानूनों का विस्तार करने की कोशिशें जारी हैं, ताकि बुजुर्गों के आसपास मौजूद लोगों की भूमिकाएं कानूनी तौर पर निर्धारित की जा सकें। इस मकसद से केंद्रीय मंत्रिमंडल ने माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण और कल्याण (संशोधन) अधिनियम, 2019 को मंजूरी दी है, जिसके तहत बुजुर्ग सास-ससुर की देखभाल करने में नाकाम रहने और मासिक गुजारा खर्च नहीं मुहैया कराने पर दामाद और बहू के खिलाफ भी मुकदमा चलाए जा सकने के प्रावधान किए गए हैं।

कई बार देखा जाता है कि कुछ परिवारों में बुजुर्ग अपने घर के बच्चों के बड़े हो जाने या विवाह होने पर उनके दूसरी जगहों पर चले जाने या फिर एक परिवार के रूप में जीवन शुरू करने के बाद अकेले हो जाते हैं। लेकिन पुत्र के अपनी पत्नी के साथ परिवार से अलग हो जाने से इतर यह भी संभव है कि किसी माता-पिता को केवल पुत्री हो। ऐसे में कानून के तहत अगर सिर्फ पुत्र की भूमिका तय होती है, तब बाकी लोग अपनी जिम्मेदारी समझना जरूरी नहीं समझते। जबकि पुत्री और दामाद की भी यह जवाबदेही है कि वे जरूरी होने पर अपने माता-पिता का खयाल रखें। यह सामाजिक संबंधों में मानवीयता और संवेदना को कायम रखने के लिए एक स्वाभाविक तत्त्व भी होना चाहिए। लेकिन अगर कुछ लोग इन संवेदनाओं का निर्वाह नहीं करते हैं, तो इसके लिए कानूनी व्यवस्था की पहलकदमी स्वागतयोग्य है। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि जीवन की सांध्यबेला में भी बुजुर्गों को अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए आर्थिक के साथ-साथ मानसिक सहयोग की भी जरूरत होती है।

वक्त के साथ समाज का स्वरूप बदलना एक हद तक स्वाभाविक कहा जा सकता है। लेकिन समाज के घटक एक-दूसरे के साथ कुछ संवेदनाओं से जुड़े होते हैं। लेकिन इन संवेदनाओं की बुनियाद पर खड़े समाज में अमूमन हर व्यक्ति की कुछ जिम्मेदारियां भी होती हैं। यह समाज खुद भी विकसित करता है और इसे शासन की ओर से भी निर्धारित किया जाता है। हमारे समाज के मुख्य घटक परिवार के ढांचे में लगभग सभी पीढ़ियों की भूमिकाएं तय मानी जाती हैं। माता-पिता से उम्मीद की जाती है कि वे जिन्हें जन्म देते हैं, आत्मनिर्भर होने तक उनका खयाल रखें। फिर बच्चों से भी यह उम्मीद होती है कि अपने दम पर खड़े होने के बाद वे अपने माता-पिता, अभिभावक या फिर घर के बुजुर्गों के लिए हर वह काम करें, जिनकी उन्हें जरूरत पड़ती है। इसी तरह की जिम्मेदारियों का निर्वहन किसी परिवार की संरचना को सहयोगात्मक, संपूर्ण, सेहतमंद बनाए रखता है और समाज को एक ठोस शक्ल देता है। जबकि इसकी कड़ियों के ढीला होने पर समाज के सूत्र कमजोर होते हैं और इस तरह एक व्यापक बिखराव की जमीन बनती है, जिसका खमियाजा न केवल बुजुर्गों, बल्कि बाद की पीढ़ियों को भी भुगतना पड़ता है।

केजरीवाल के मंत्री ने क्यों कहा

'दाह संस्कार से बढ़ रहा है प्रदूषण'

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन ने केंद्र सरकार को खत लिखा

विशेष खबर संवाददाता

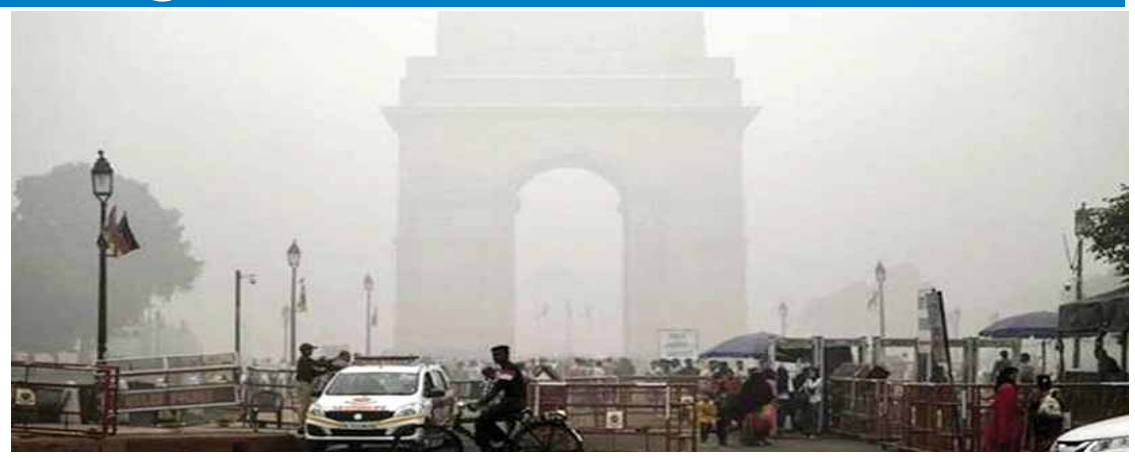

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण पर लगाम लगाने के बजाय दिल्ली की केजरीवाल सरकार बयानबाजी करने में ज्यादा व्यस्त रहती हैं। पहले तो खुद सीएम केजरीवाल ने दिल्ली में प्रदूषण के लिए हरियाणा और पंजाब के किसानों को जिम्मेदार ठहराया था। क्योंकि पराली जलाते हैं। अब दिल्ली सरकार के पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन ने दिल्ली में हो रहे प्रदूषण को लेकर सीधा-सीधा हिन्दू धर्म को निशाने पर लेकर बेहूदा बयान दिया है।

केजरीवाल सरकार में पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन ने केंद्र सरकार को खत लिखकर कहा है कि मरे हुए लोगों की चिताओं को जलाने से दिल्ली में प्रदूषण हो रहे हैं, जिसके कारण लगभग 50 हजार लोगों की जान जा चुकी है।

केंद्र सरकार को भेजे गए खत में इमरान हुसैन ने लिखा है कि दिल्ली में मौजूद लकड़ी का इस्तेमाल करने वाले शमशान को जल्द से जल्द ग्रीन शमशान में बदलने की जरुरत है, क्योंकि दाह संस्कार में इस्तेमाल होने वाली लकड़ी और दूसरे पदार्थ दिल्ली में प्रदूषण की एक बड़ी वजह हैं।

उल्लेखनीय है की मरे हुए लोगों की चिताएं सिर्फ हिन्दू धर्म में जलायी जाती हैं, मुस्लिमों में दफनाया जाता है, केजरीवाल के मंत्री इमरान हुसैन ने प्रदूषण के बहाने ऐसा बयान देकर सिर्फ हिन्दुओं की आस्था से खिलवाड़ किया है। उनके इस बयान से हिन्दुवादी संस्थाओं में गहरा रोष है। हो सकता है आने वाले दिनों में आप मंत्री को अपने बयान के कारण मुसीबतों को सामना करना पड़ जाएं।

वैसे इमरान हुसैन ने ये बयान बिना किसी आधार के नहीं दिया है। जब इस विषय में उनसे बात की गई तो उन्होंने बताया कि 2016 में राष्ट्रीय हरित पंचाट (एनजीटी) ने पर्यावरण मंत्रालय और दिल्ली सरकार से कहा था है कि वे मानव शवों के दाह संस्कार के वैकल्पिक तरीके उपलब्ध कराने संबंधी योजनाओं की पहल करें। पंचाट ने लकड़ियां जलाकर किए जाने वाले पारंपरिक दाह संस्कार को पर्यावरण के लिए घातक बताया था। एनजीटी में एक याचिका पर सुनवाई करतेहुए पंचाट ने कहा गया था कि परंपरागत तरीकों से मृत देह के अंतिम संस्कार से वायु प्रदूषण होता है लिहाजा दाह संस्कार के वैकल्पिक उपाय उपयोग में लाए जाने चाहिएं।

▸▸ एनजीटी ने भी 2016 में कही थी ये बात

▸▸ एजीटी ने वैकल्पिक उपायों का दिया था सुझाव

▸▸ हिन्दुवादी संस्थाओं में गहरा रोष

इमरान के मुताबिक न्यायमूर्ति यू.डी. सल्वी के नेतृत्व वाली पीठ ने कहा था कि लोगों की विचारधारा बदलने और विद्युत शवदाह एवं सीएनजी जैसे पर्यावरण अनुकूल तरीके अपनाने की जरूरत है। पीठ ने कहा, यह मामला आस्था और लोगों की जीवन दशा से जुड़ा है इसलिए यह नेतृत्व करने वालों और खास तौर से धार्मिक नेताओं का दायित्व है कि वह आस्थाओं का रूख एक दिशा की ओर मोड़ें और लोगों की अपनी आस्थाओं का पालन करने की विचाराधारा में बदलाव लाकर उन्हें पर्यावरण अनुकूल रीति अपनाने के लिए मनाएं।

पीठ ने स्थानीय निकायों सहित अधिकारियों को इस बारे में जनता को शिक्षित करने का निर्देश देते हुए कहा, यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह लोगों की विचारधारा में बदलाव लाए और साथ ही अपने नागरिकों के लिए दाह संस्कार के पर्यावरण अनुकूल वैकल्पिक उपाय प्रदान करे।

एनजीटी ने कहा था कि दाह संस्कार के परंपरागत उपायों से पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और नदी में अस्थियां बहाने से पानी में प्रदूषण बढ़ता है। पंचाट ने कहा कि मृत्यु के बाद मानव देह का निपटान करना तब से एक समस्या रही है, जब धरती पर पहले मानव की मृत्यु हुई। यह देखना मुश्किल नहीं है कि पार्थिव शरीरों को अगर लावारिस छोड़ दिया जाए तो वह स्वास्थ्य और मानवीय आधार पर उचित नहीं होगा।

पंचाट ने कहा, इसी वजह से विश्व के धर्मों में उनकी आस्थाओं और परिस्थितियों के अनुरूप मृत्युपरांत मृत देह के निपटान के विविध तरीके मौजूद रहे हैं। जहां लकड़ी की बहुलता थी, वहां मृत देह को जलाया गया और जहां लकड़ी उपलब्ध नहीं थी, वहां मृत देह को दफनाया गया। इमरान ने कहा है कि उनका मकसद किसी धर्म की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

एनजीटी में एक याचिका पर सुनवाई करतेहुए पंचाट ने कहा गया था कि परंपरागत तरीकों से मृत देह के अंतिम संस्कार से वायु प्रदूषण होता है लिहाजा दाह संस्कार के वैकल्पिक उपाय उपयोग में लाए जाने चाहिएं।

स्वाच्छता सर्वेक्षण-2020 के लिए क्या है तैयारी

क्या गाजियाबाद स्वच्छता में फिर बनेगा नंबर वन

मेयर-नगरायुक्त के बीच शीतयुद्ध से उठ रहे सवाल, सर्वेक्षण के नए मानक भी बन रहे चुनौती

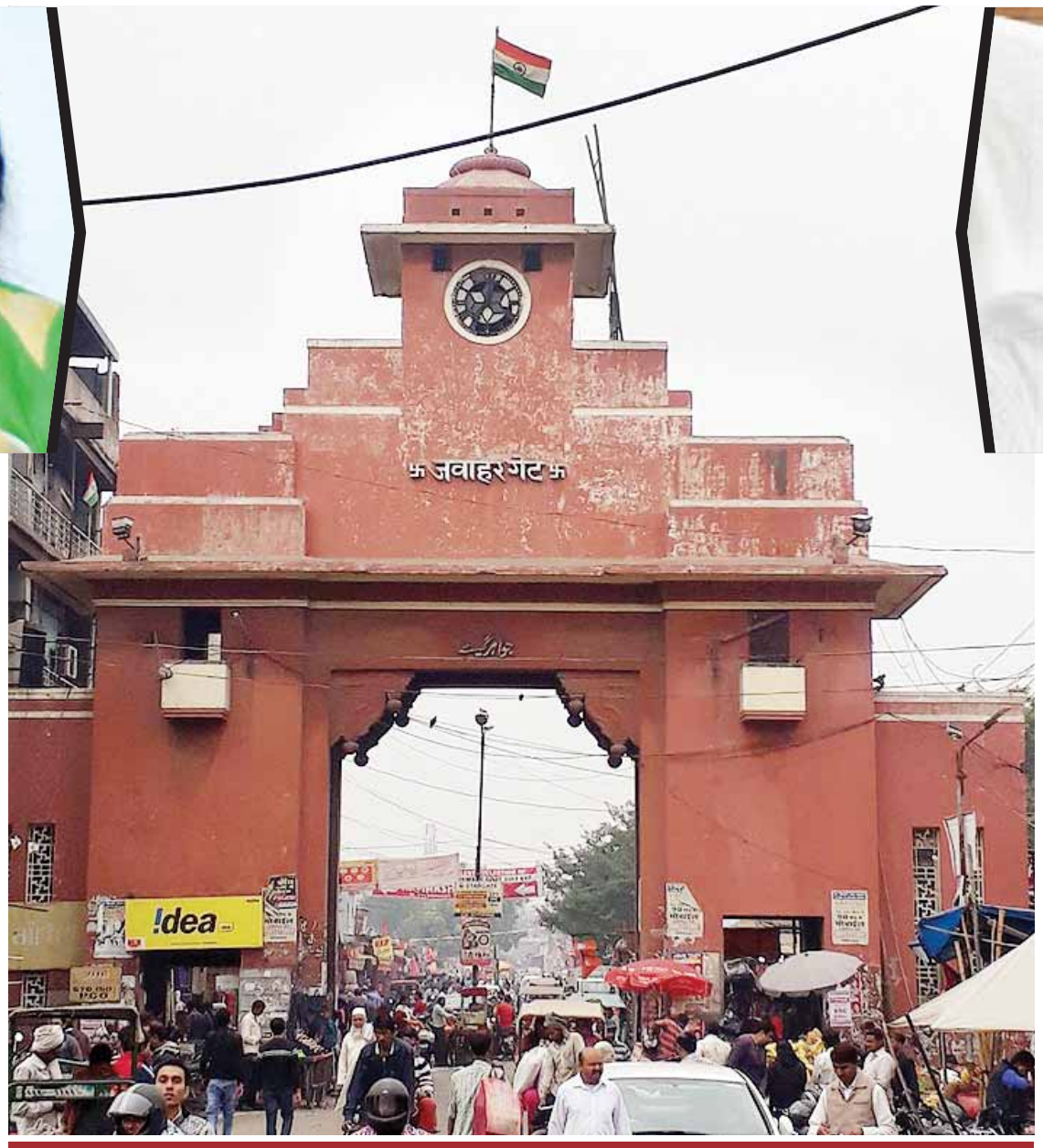

संवाददाता

गाजियाबाद। स्वच्छता सर्वेक्षण 2019 में उत्तर प्रदेश में लगातार दूसरी बार प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला गाजियाबाद नगर निगम क्या इस बार भी प्रथम स्थान लेकर हैट्रिक बनाने में कामयाब होगा। हालाँकि स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 में अपनी रैंकिंग बरकरार रखने के लिए निगम प्रशासन युद्ध स्तर पर सफाई अभियान में जुटा है। लेकिन मेयर और निगमायुक्त के बीच चल रहा शीतयुद्ध अगर इन प्रयासों में आड़े आया तो गाजियाबाद के पहले नंबर का दर्जा छिन भी सकता है।

बता दें कि गत वर्ष शहर में स्वच्छता सर्वेक्षण 2019 का अभियान चलाया गया था। इस अभियान में शहर को शौच मुक्त और कूड़ा मुक्त बनाने से लेकर हर काम कराया गया था। लगातार दिन-रात सफाई कर्मियों द्वारा अभियान चलाया गया था। इस दौरान नगर विकास मंत्रालय भारत सरकार की टीमों ने शहर की स्वच्छता के परखा। जिसके परिणाम स्वरुप देश के स्वच्छता सर्वेक्षण 2019 के अंतर्गत गाजियाबाद ने दूसरी बार फिर से प्रदेश में इतिहास रचा और प्रथम स्थान पर कब्जा कायम रखा। वहीं देश में अपनी स्वच्छता की स्थिति में सुधार करते हुए 13वां स्थान प्राप्त किया।

इसलिए मुश्किल होगी चुनौती

स्वच्छ भारत मिशन के अतर्गत होने वाले स्वच्छता सर्वेक्षण-2020 पिछले वर्ष के मुकाबले इस बार काफी चुनौतीपूर्ण होगा। इस बार जनवरी 2020 में होने वाले स्वच्छ सर्वेक्षण को तीन भागों में बांटा गया है। इसमें हर तिमाही में होने वाली स्वच्छ सर्वेक्षण (एसएस) लीग के भी अंक जोड़े जाएंगे। जो कि सर्वेक्षण अभियान का चौथा हिस्सा होगा। इस बार स्वच्छता सर्वेक्षण 6000 अंक का होगा। इसमें हर तिमाही अप्रैल-जून 2019, जुलाई-सितंबर 2019, अक्तूबर-दिसंबर 2019 में हुई एसएस लीग-2020 को भी जोड़ा जाएगा। इन तीनों लीग के 1500 अंक हैं, जबकि जनवरी में होने वाले स्वच्छता सर्वेक्षण के 4500 अंक हैं। इनमें सबसे ज्यादा अंक हासिल करने वाले शहरों को ही जगह मिलेगी। सर्विस लेवल प्रोग्रेस को इस बार अलग किया गया है। इसके अलग से 2000 नंबर हैं।

नगर आयुक्त और मेयर ने क्यान कदम उठाए

हांलाकि रैंटिग नए मानदंड तय होंने के बाद निगम प्रशासन ने जिले को छह जोन में बांटकर एक कार्यशाला के जरिए अधिकारियों और कर्मचारियों प्रशिक्षण भी दिया जा चुका है अब उसी के आधार पर स्वाच्छएता अभियान चलाया जा रहा है।

शहर को स्वच्छ बनाने के लिए मेयर आशा शर्मा और नगर आयुक्त दिनेश चन्द्र हर संभव कोशिशें में भी जुटे हैं। महापौर आशा शर्मा ने इस दिशा में निगम की तरफ से बर्तन बैंक बनाकर एक सराहनीय प्रयास किया है। साथ ही सफाई को लेकर भी कई कदम शहर में उठाए हैं। उन्होंने शहर को स्वच्छ बनाने के लिए जनभागीदारी के लिए भी कई प्रभावी योजनाओं पर अमल शुरू कराया है। नगर आयुक्त दिनेश चंद्र वार्ड स्तीर स्वच्छता अभियान की खुद मोनिटरिंग कर रहे हैं।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा हैं। इस दौरान डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन के बारे में भी जानकारी दी जा रही हैं कि किसी इलाके में कूड़ा कलेक्शन की गाड़ी नहीं पहुंच रही है तो लोगों से निगम को सूचित करने के लिए कहा जा रहा है। साथ ये चेतावनी भी दी रही है कि अगर कोई कूड़ा फैलाता है तो जोनल अधिकारी ही जिम्मेदार माना जाएगा। बताया जा रहा है कि सूखा और गीला कूड़ा यानी दो डस्टबिन हर किसी को बनाने चाहिए। ताकि कूड़े को अलग-अलग डाला जा सके।

लेकिन कई कारणों से स्वाच्छ ता सर्वेक्षण इस बार गाजियाबाद निगम के लिए चुनौती बन रहा है। मसलन शहर में 56 स्थानों पर विलोपित कूड़ा घर बनाए गए थे लेकिन कई जगह तो यहां कूड़ा डाला जा रहा है। इसके अलावा सौंदर्यीकरण के लिए कई चौराहों पर छोटे पार्क बनाए गए, उनमें भी कबाड़ भरा हुआ है शहर में सूखा और गीला कूड़ा अलग-अलग सेंटर पर पहुंचना चाहिए, लेकिन इसका पालन नहीं हो रहा।निगम के पास कूड़ा डालने के लिए अपनी डंपिंग साइट तक नहीं है।

मेयर और निगरायुक्त के बीच विवाद भी बडी चुनौती

मेयर आशा शर्मा ओर नगर आयुक्त दिनेश चंद्र सिंह के बीच पिछले कुछ समय से चल रहा शीतयुद्ध भी स्वशाच्छरता सर्वेक्षण के लिए बडी चुनौती बन रहा है। मेयर ने निगमायुक्तत पर शहर में विकास कार्य न कराने और स्वच्छता पर गंभीरता न दिखाने जैसे कई आरोप लगाकर सीएम को पत्र भेजाथा। जिसके बाद दोनों ने एक-दूसरे पर कई तरह के आरोप लगाए। यही नहीं नगर आयुक्त ने एक कदम और आगे बढ़ाकर मेयर के कैंप ऑफिस का मामला भी शासन को भेज दिया है। दोनों के बीच विवाद इतना बढ गया कि शासन को बीच में हस्तसक्षेप करना पडा। लेकिन ये मामला भले ही अब उपर से थम गया हो लेकिन दोनों कैंपों के बीच शीतयुद्ध अभी जारी है।

जनभागीदारी के लिए जागरूकता रैली

नगर निगम गाजियाबाद प्रशासन, स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 के लिए जागरूकता और जन भागीदारी पर सबसे ज्यादा जोर दे रहा है। इसके तहत गत दिनों स्वच्छता संदेश के नारे के साथ एक महारैली निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, अफसरों, विधायकों, आदि ने मिलकर स्वच्छता की शपथ ली। इस अवसर पर जिले के प्रभारी मंत्री सुरेश खन्ना ने राजेन्द्र नगर स्थित खेतान पब्लिक स्कूल में आयोजित स्वच्छता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली से पूर्व आयोजित कार्यक्रम में महापौर आशा शर्मा व विधायकों के साथ मिलकर कचरे के रावण का तीर चलाकर वध किया। स्वच्छता रैली में बड़ी संख्या में जहां स्कूली बच्चों ने भाग लेकर स्वच्छता की शपथ ली वहीं उनके द्वारा पॉलीथिन व सिंगल यूज प्लास्टिक, कूड़े-कचरे के निस्तारण को लेकर मॉडल भी बनाए

जिनको काफी सराहा गया। मुख्य अतिथि सुरेश खन्ना ने कूड़े-कचरे और वेस्ट मटेरियल से बने रावण का बाकायदा वध किया।

नगर आयुक्त दिनेश चंद ने बताया कि स्वच्छता के लिए सफाई के रावण को मारना सबसे जरूरी है। स्वच्छता का संदेश देने के लिए रैली निकली गई। जिसमें जीप पर सवार होकर प्रभारी मंत्री सुरेश खन्ना ने लोगों से स्वच्छता को अपनाने का आह्वान किया। उनके साथ जीप में महापौर आशा शर्मा, नगरायुक्त दिनेश चंद, विधायक सुनील शर्मा आदि थे।

विश्व विकलांगता दिवस के उपलक्ष्य में

आरएसएस की विंग 'सक्षम' ने दिव्यांगों के लिए किया दौड़ का आयोजन

संवाददाता

नई दिल्ली । अपनी अलग-अलग विंग के माध्यम से सामाज सेवा के कार्य करने वाली आरआरएस संस्था की एक विंग सक्षम ने एक दिसंबर को विश्व विकलांगता दिवस के उपलक्ष्यन में दिल्ली के निर्माण विहार स्थित वी3एस मॉल में दिव्यांगों के प्रति जागरूकता के लिए एक दौड़ का आयोजन किया। जिसमे अतिथि कोलकाता उच्चए न्यालयालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश रहे और वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता पार्थ शखा दत्तो मुख्य अतिथि थे, समारोह के मुख्य वक्ता के रूप में नेशनल फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड संस्था के महासचिव और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठन अधिवक्ताय एस के रूंगटा उपस्थिति थे, कल्याण पुरी सब डिवीजन के सहायक पुलिस आयुक्तत सुबोधकांत गोस्वायमी इस समारोह के विशेष मेहमान थे। बाबा मोहन राम विद्यार्थी शाखा, साकेत ब्लॉक, मंडावली के कन्हैया कुमार ने सामान्य वर्ग दौड़ में द्वितीय और हर्षजी शिवा, विद्यार्थी शाखा, तालाब चौक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सक्षम दिल्ली के अध्यक्ष सतीश अग्रवाल और सचिव गोपाल कृष्णख ने विजेताओं को प्रमाण पत्र वितरित किएए जबकि सक्षम पूर्वी विभाग के अध्यीक्ष ओमपाल गौड़, सचिव पंकज गोयल के साथ आरएसएस के कई पदाधिकारी इस समारोह में मौजूद थे। इस मौके पर स्कूली बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए और दिव्यांग कलाकारों ने गीत संगीत की प्रस्तुति से समारोह में रंग बिखेरे ।

अनारकली की पार्षद ने कराया जगतपुरी के लोगों की समस्याओं का निराकरण

संवाददाता

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के अनारकली वार्ड की निगम पार्षद रेखा दीक्षित ने जगतपुरी एफ ब्लॉक क्षेत्र का दौरा करने करते हुए आरडब्लूए एवं स्थानीय लोगों को होने वाली समस्याओं का संज्ञान लिया और सफाई व्यवस्था को और दुरुस्त रखने के लिए सम्बंधित अधिकारियों को कड़े आदेश दिए । निगम पार्षद ने मौके पर ही सफाई कर्मचारियों द्वारा समस्या का निवारण करवाया।

पार्षद रेखा दीक्षित ने सम्बंधित अधिकारियों को कहा की सफाई व्यवस्था को लेकर कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और मलेरिया विभाग के अधिकारियों को भी सख्त आदेश दिए कि नालियों में नियमित रूप से दवाई छिडकी जाये। क्षेत्र में दौरे के वक्तक नगर निगम से वर्क्स जे.ई. देव स्वरुप सिंह, सफाई निरीक्षक परविंदर शर्मा, मलेरिया निरीक्षक भूले राम शर्मा, सहायक सफाई निरीक्षक राजेन्द्र प्रसाद, क्षेत्र की आर.डब्लू.ए. के पदाधिकारी जमशेद अली, युतिंदर शर्मा, मनमोहन, मो आसिफ, महेश, वैभव गर्ग, कमल राणा, दौलत सिंह, निजामुद्दीन सिद्दकी एवं बीजेपी अनारकली मंडल से राकेश दीक्षित, चमन लाल मोहला, कुलदीप सिंह, एम.एल.जैन, पुनीत अरोड़ा, विकास गुलाटी, मिथलेश जैन, मंजू गुप्ता, सोनिया राजपाल, मीनाक्षी वर्मा, मुस्कान अग्रवाल, उमा खन्ना, देवऋषि त्रिपाठी, दीपक कपूर, अरविन्द शर्मा, ज्ञान चंद, विनोद चौहान, मनोज कश्यप, निजामुद्दीन सैफी, बबलू अंसारी, आदि लोग उपस्थित रहे।

आ गया केजरीवाल का चुनावी वाई-फाई

मनोज तिवारी ने लगाए गंभीर आरोप

प्रमुख संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में फिर से जीत का परचम लहराने की कवायद में जुटी हुई है। आम आदमी पार्टी के मुखिया और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल लोगों को लुभाने के लिए हर पैंतरे का इस्तेलमाल कर रहे हैं। अरविंद केजरीवाल ने बिजली, पानी और बस में महिलाओं को फ्री यात्रा के बाद अब मुफ्त वाई-फाई सेवा प्रदान करने की घोषणा की। फ्री वाई-फाई सुविधा की शुरूआत 16 दिसंबर से हो जाएगी।

सरकार की तरफ से कहा गया है कि 16 दिसंबर को 100 हॉटस्पॉट शुरू कर इसकी शुरूआत की जाएगी और प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 100 हॉट स्पॉवट स्थापित किए जाएंगे। हॉट स्पॉट किराया मॉडल पर लगाए जाएंगे और हर यूजर को प्रति महीने 15 जीबी फ्री डाटा मिलेगा। अरविंद केजरीवाल का कहना है कि पिछले विधानसभा चुनाव के समय किया गया गया आखिरी वादा भी उन्हों ने पूरा कर दिया। उन्हों ने दावा कि दिल्लीी सरकार देश में ऐसी पहली सरकार है जिसने अपने सभी चुनावी वायदे कार्यकाल खत्मप होंने से पहले पूरे कर दिए। केजरीवाल सरकार का तर्क है कि इंटरनेट के फ्री हो जाने से छात्रों समेत सभी को लाभ पहुंचेगा।

लेकिन केजरीवाल सरकार के दिल्ली में फ्री वाई-फाई की सुविधा शुरू करने संबंधी घोषणा बीजेपी ने सवाल उठाने शुरू कर दिए है। बीजेपी ने इस मामले में कुछ गंभीर आरोप लगाए हैं। बीजेपी का दावा है कि फ्री वाई-फाई की सुविधा के इस्तेमाल से पहले लोगों से केवाईसी के नाम पर एक फॉर्म भरवाया जाएगा। बीजेपी को शक है कि इस फॉर्म के माध्यम से केजरीवाल सरकार दिल्ली के लोगों की व्यक्तिगत जानकारियां इकट्ठा करने की कोशिश कर रही है, जिसका इस्तेमाल वह चुनावों के दौरान कर सकती है। यही वजह है कि बीजेपी ने सरकार से इस मामले में कुछ जानकारियां जनता के सामने स्पष्ट करने की मांग की है।

दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष मनोज तिवारी ने कहा है कि केजरीवाल सरकार को सबसे पहले दिल्ली की जनता को यह बताना चाहिए कि हॉट स्पॉट लगाने का जिम्मा कौन सी कंपनी को सौंपा गया है और उसका टेंडर कब किया गया? तिवारी ने फ्री वाई-फाई की घोषणा को केजरीवाल का चुनावी स्टंट बताते हुए कहा कि असल में इसके जरिए आम आदमी पार्टी दिल्ली के लोगों की व्यक्तिगत जानकारियां इकट्ठा करने की कोशिश कर रही है, ताकि चुनावों में अपनी जरूरत के हिसाब से वह उसका इस्तेमाल कर सके। तिवारी ने यह भी पूछा कि जब 58 महीने में केजरीवाल दिल्ली के लोगों को फ्री वाई-फाई की सुविधा नहीं दे पाए, तो अब 58 दिनों में यह कैसे संभव होगा?

कुंडली में मंगल

प्रबल साहस और पराक्रम का प्रदाता

पुराणों में मंगल को देवताओं के सेनापति कार्तिकेय का ही रूप माना गया है ।ज्योतिष शास्त्र का मत है कि कुंडली में मंगल जब अशुभ स्थिति में होता है। तो वह व्यक्ति को झूठा, चुगलखोर, कठोर हिंसक एवं झगड़ालू बना देता है।

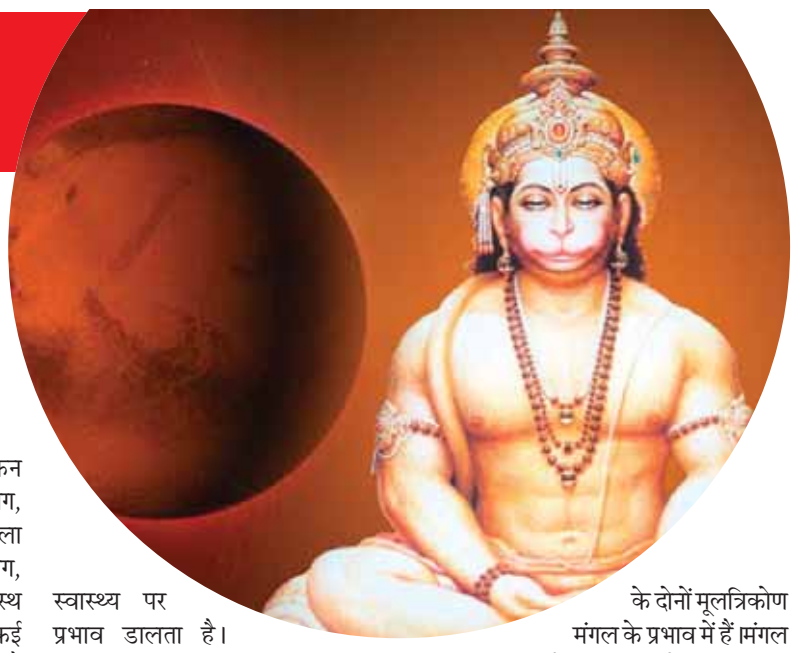

आचार्य निशांत भारद्वाज
(मो.- 9528425099)

ज्योतिष में मंगल को पराक्रम का कारक माना गया है। सौर परिवार में इसे सेनापति का दर्जा दिया गया है। मंगल पृथ्वी के समीप का ग्रह है। यह सामान्यतः 45 दिन एक राशि को भोग लेता है। यह मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी है ।मकर इसकी उच्च राशि और कर्क इसके नीच राशि है ।यह मृगशिरा,चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी है ।सिंह,धनु और मीन राशि का मित्र, कन्या और मिथुन का शत्रु वृष, तुला ,मकर और कुंभ राशि के साथ सम होता है। जन्मकुंडली का तीसरा और छठा भाव इसके कारक तत्व में आते हैं ।पुराणों में मंगल को देवताओं के सेनापति कार्तिकेय का ही रूप माना गया है ।यह जन्मांग में अपने भाव से चौथे सातवें और आठवें भाग पर पूर्ण दृष्टि रखता है।

यह जन्म कुंडली के तीसरे, छठे,दसवें और ग्यारहवें भाव में शुभ परिणाम एवं प्रथम,द्वितीय, पंचम, सप्तम और नवम भाव में अरिष्ट प्रभाव दायक होता है। यह ग्रह लाल रंग का है, अतः इसे लोहितांग भी कहा गया है। जिस व्यक्ति की कुंडली पर मंगल का सर्वाधिक प्रभाव होता है। वह व्यक्ति औसत कद कमर पतली सदा युवा दिखाई देने वाला और स्थिर चित वाला होता है। ऐसे व्यक्ति में बदला लेने की तीव्रता भावना होती है। ज्योतिष शास्त्र का मत है कि कुंडली में मंगल जब अशुभ स्थिति में होता है। तो वह व्यक्ति को झूठा, चुगलखोर, कठोर हिंसक एवं झगड़ालू बना देता है। मंगल व्यक्ति के जीवन में 28 से 32 वर्ष तक की उम्र में विशेष प्रभाव देता है ।मंगल मूलांक 9 का स्वामी भी है। मंगल और केतु मिलकर व्यक्ति को अहंकारी बना देते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकार की तुष्टि करने के लिए हत्या करने से भी नहीं चूकता है ।जब लग्न में मंगल और केतु बैठे हो अथवा लग्न पर उनकी पूर्ण दृष्टि पंचम भाव पर भी राहु और शनि का प्रभाव हो तो उपयुक्त स्थिति अवश्य देखी गई है ।लेकिन मंगल से बनने वाले सुनफा योग, अनफा योग, चंद्रमा, मंगल,शनि,शुक्र से बनने वाला इन्द्रयोग,रूचक नामक पंच महापुरुष योग, चंद्र-मंगल योग व्यक्ति को सुखी संपन्न स्वस्थ पराक्रमी और राजनीतिक बनाते हैं ।कई महापुरुषों की कुंडली में यह योग विद्यमान हैं ।फिर इतने अच्छे योग देने वाला मंगल कितना अमंगल कारी हो सकता है, यह ज्योतिषियों के लिए शोध का विषय है।

जब मंगल का प्रभाव लग्न, लग्नेश, चंद्र लग्न ,चंद्र लग्नेश,सूर्य लग्नेश एवं सूर्य लग्न को मिलाकर सर्वाधिक हो तो व्यक्ति की रुचियां और व्यवसाय निम्नलिखित ही होते हैं और व्यक्ति सफल भी इन्हीं में होता है। प्रशासनिक क्षेत्र तथा नागरिक प्रशासन, सैन्य प्रशासन,वैज्ञानिक,वकालत, विधि वेत्ता, भवन निर्माण, कृषि कार्य, खनिज विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, भूगोल, युद्ध कौशल ,सेना अथवा पुलिस में कार्यरत होना क्रीडा, चिकित्सा, सर्जरी, कैंसर, रक्तचाप, उदर रोग, रति रोग आदि की चिकित्सा का कार्य शस्त्र निर्माण,आभूषण निर्माण, वास्तु कला, स्थापत्य कला आदि।

कुंडली में अशुभ स्थिति का मंगल स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है। स्नायु विकार, दुर्बलता, अल्सर, टाइफाइड, चर्म रोग, उदर विकार, गुप्त रोग, सिरदर्द, जलना-गिरना, हड्डियों का टूटना इत्यादि रोक देता है। मंगल कुंडली में किसी भी भाग में हो, लेकिन यदि अपनी राशि मेष या वृश्चिक में हो,उच्च राशि मकर में हो अथवा नीच राशि कर्क में हो, अथवा किसी भी राशि में होकर मेष, वृश्चिक अथवा मकर पर पूर्ण दृष्टि डालता हो,तो व्यक्ति ऊपर कहे गए क्षेत्रों में से किसी ना किसी क्षेत्र में प्रसिद्धि अवश्य पाता है ।मंगल का प्रभाव कारक ग्रहों अथवा उनकी राशियों पर होना चाहिए।

कुछ महान पुरुषों जैसे श्रीमती इंदिरा गांधी जी की कुंडली में मंगल प्रमुख कारक होकर धनु और उच्च शिक्षा विभाग में स्थित है। वहीं से मंगल पंचम भाव में स्थित सूर्य बुध पर पूर्ण दृष्टि डाले हुए हैं ।सूर्य मंगल में राशि परिवर्तन भी है ।मंगल की पूर्ण दृष्टि नवम भाव अर्थात भाग भाग्य भाग पर स्थित है ।अर्थात कुंडली के दोनों मूलत्रिकोण मंगल के प्रभाव में हैं ।मंगल की स्थिति के साथ पराक्रमेश बुध पर भी मंगल की पूर्ण दृष्टि है। मंगल पराक्रम का स्थाई कारक ग्रह है ।अतः श्रीमती गांधी जी ने अदम्य साहस एवं उत्साह विद्यमान रहा। वे स्वतंत्र भारत की शक्ति प्रधानमंत्री के रूप में इतिहास में अपना नाम करा कर गई ।

ऐसे ही महात्मा गांधी जी की कुंडली में लग्नस्थ का पूर्ण प्रभाव लग्न ,लग्नेश और त्रिकोणीय बुध पर पराक्रम, इस गुरु पर चतुर्थ भाव पर, शुक्र की दोनों राशियों पर मंगल का प्रभाव था। चतुर्थ भाव जनता का है। जिस पर मंगल की उच्च दृष्टि थी,महात्मा गांधी केइशारे पर, उनकी आवाज पर जनता त्याग बलिदान के लिए तैयार हो जाती थी। मंगल की स्थिति ने उन्हें इतना साहस प्रदान किया था कि उस समय विश्व में सर्व शक्तिमान मानी जाने वाली ब्रिटिश सत्ता ने भी उन्होंने संघर्ष किया और भारत को आजादी दिलाने में सफल रहे फिर स्वयं राष्ट्रपिता कहलाए।

सर्दियों में ऐसे रखें अपना खास ख्याल

सर्दी का मौसम आ चुका है। इस मौसम में सर्द कठोर हवा सेहत और त्वचा के लिए काफी हानिकारक है। इसलिए सेहत का ख्याल रखना और भी ज्यादा जरूरी हो जाता है।

प्रेरणा

सर्दियो की बात जब भी होती है तो सबसे पहले दिमाग में एक ही ख्याल आता है कि हमें गर्म कपड़े निकालने हैं। लेकिन सर्दियों के आते ही केवल गर्म कपड़ों से अपनी त्वचा को ढक लेना ही काफी नहीं होता हैं। सर्दियों के दिनों में चलने वाली शुष्क हवा के कारण हमारी त्वचा को कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं जो कि धिरे-धिरे एक बड़ी परेशानी बन जाती हैं। लेकिन अक्सर ये देखा गया है कि लोगो को पता ही नही होता है की सर्दियों के दिनों में उन्हें कैसे अपना ख्याल रखना है। आज हम आपको कुछ ऐसे ही खास टिप्स बताने जा रहे है जिनकी मदद से आप सर्दियों के दिनों में भी अपनी त्वचा को चमकदार और खूबसूरत बना सकती हैं।

त्वचा की देखभाल- सर्दियां शुरू होते ही अक्सर लोगों को अपनी त्वचा को लेकर काफी पेशानी होती है जिनकी रुखी त्वचा होती है वो उसे कोमल बनाने को लेकर परेशान रहते है तो जिनकी ऑयली त्वचा होती है वो उसे साफ रखने के लिए परेशान रहते है। सर्दियों के दिनों में हमारी त्वचा को सबसे ज्यादा परेशानी सर्द हवाओं के कारण होता है ये हमारी त्वचा के संपर्क में आकर त्वचा को शुष्क बना देती हैं। ये सर्द हवाएं ऑयली त्वचा को भी उतनी ही हानी पहुंचाती हैं जितनी की रुखी त्वचा को तो अच्छा होगी की आप जब भी बाहर जाए तो अपने हाथों के साथ-साथ अपने चेहरे को भी कवर कर के चले। इसके अलावा आप रोज रात को मॉश्चराइजर का प्रयोग जरुर करे इससे आपकी त्वचा पूरे दिन कोमल रहेगी और उसमे नमी भी बनी रहेगी।

बालों की देखभाल

सर्दियों के दिनों में त्वचा के साथ-साथ बालों का भी ख्याल रखना चाहिए। अक्सर देखा गया है कि सर्दियों के दिनों में लड़कियां अपने बालों को धोने के लिए गर्म पानी का प्रयोग करती है पर क्या आप ये जानती है कि ये गर्म पानी आपके बालों को कमजोर और बेजान कर सकते हैं। तो अच्छा होगी की आप सर्दियों के दिनों में हल्के गुनगुने पानी का ही प्रयोग करें। इससे आपके बाल अच्छे से साफ भी हो जाएंगे और उन्हें किसी भी तरह का नुकसान भी नही होगा। इसके अलावा आप जब भी बाल धोए तो अपने बालों की हल्के गुनगुन तेल से मालिश अवश्य कर ले और धोने के बालों में कंडिश्नर का भी प्रयोग करे इससे आपके बाल कोमल और चमकदार लगने लगेगे।

सावधान रहे- अपनी त्वचा का ख्याल रखने के लिए ये जरुरी नही है कि आपको उसे केवल बाहरी रुप से पोषित करना हैं। सर्दियों के दिनों में अपनी त्वचा का जितना बाहर से ख्याल रखना जरुरी होता है उतना ही इसे अंदर से भी स्वस्थ रखना जरुरी होता हैं। इसके लिए आपको इस बात का ख्याल रखना होगा की आप जो भोजन खा रही है वो आपके लिए सही है कि नही। जितना हो सके तैलीय भोजन से दूर ही रहे और दिन में कम से कम 10 गिलास पानी अवश्य पीयें। इससे आपके शरीर को पर्याप्त मात्रा में पानी मिलता रहेगा और आपकी त्वचा हर समय खिली-खिली रहेगी।

एनआरसी

हो लागू, पर बरती जाए सावधानी

प्रणव गोस्वामी
वरिष्ठ पत्रकार

बस इतनी सावधानी बरतनी होगी कि असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में जिस तरह राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन यानी एनआरसी लागू करने का प्रयास हो रहा है और उसमें बहुत सारे ऐसे लोगों पर भी भारत की नागरिकता खत्म होने का खतरा मंडराने लगा है,जो कई पीढ़ियों से यहां रह रहे हैं।

नागरिकता संशोधन विधेयक को मंत्रिमंडल ने मंजूरी दे दी है। अब सरकार इस विधेयक को संसद के दोनों सदनों में रखेगी, ताकि यह कानून का रूप ले सके। लोकसभा में तो राजग को प्रचंड बहुमत है, इसलिए वहां से इसे मंजूरी मिलने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। राजग से अलग कुछ दलों की इस पर चुप्पी को देखते हुए राज्यसभा में भी कोई बड़ी अड़चन नजर नहीं आती। राष्ट्रीयता कानून विधेयक का मकसद पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से शरणार्थी के रूप में भारत आए गैर-मुसलिम लोगों को नागरिकता प्रदान करना है। हालांकि इस विधेयक के सभी पहलुओं को अभी सार्वजनिक नहीं किया गया है, पर इसे लेकर विपक्षी दल सरकार पर इसलिए हमलावर हैं कि वह इसके जरिए अल्पसंख्यक मुसलिमों पर शिकंजा कसने का प्रयास कर रही है। मगर सरकार ने कहा है कि ये तीनों देश चूंकि मुसलिम बहुल हैं और वहां गैर-मुसलिम नागरिकों पर अत्याचार होते रहते हैं, इसलिए उनको सुरक्षा देना हमारा कर्तव्य है। वहां से आए मुसलिम शरणार्थियों को वापस भेजने में उनकी सुरक्षा आदि का कोई खतरा नहीं है। मगर विपक्ष के गले यह तर्क उतर नहीं रहा। दरअसल, असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में

जिस तरह राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन यानी एनआरसी लागू करने का प्रयास हो रहा है और उसमें बहुत सारे ऐसे लोगों पर भी भारत की नागरिकता खत्म होने का खतरा मंडराने लगा है, जो कई पीढ़ियों से यहां रह रहे हैं। बस कुछ जरूरी कागजात न हो पाने की वजह से उनकी नागरिकता संदिग्ध मान ली गई है। फिर कुछ मौकों पर गृहमंत्री के दिए बयानों से लोगों में यह भ्रम पैदा हुआ है कि वे सिर्फ मुसलिम समुदाय के लोगों को देश से बाहर भेजने का रास्ता निकाल रहे हैं। इसलिए विपक्ष का विरोध अधिक है। जबकि सरकार ने एनआरसी लागू करने का कदम इसलिए उठाया था कि इन तीनों पड़ोसी देशों से शरणार्थी की तरह घुसपैठ करने वालों में कई आतंकवादी भी पहुंच जाते हैं। यों भी बांग्लादेशी शरणार्थियों की गतिविधियां अनेक मौकों पर संदिग्ध पाई गई हैं। चूंकि सरकार आतंकवाद से निपटने के लिए हर तरह से चाकचौबंद होना चाहती है, इसलिए वह एनआरसी को लेकर गंभीर है।

पूरी दुनिया में जहां भी अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति अगर अन्याय होता है और वे वहां से पलायन करते हैं, तो दूसरे देश उन्हें शरणार्थी के तौर पर रहने का अवसर देते हैं। हर जगह इसके कायदे-कानून हैं। मगर शरणार्थियों को संबंधित देश की नागरिकता दी जाए या नहीं, इसके लिए भी कानून हैं। भारत में भी हैं। मगर खासकर बांग्लादेश से आकर वर्षों से यहां बसे बहुत सारे मुसलिम परिवारों ने राशन कार्ड, आधार कार्ड जैसे नागरिकता के लिए जरूरी कागजात भी हासिल कर लिए हैं। गैरकानूनी तरीके से ऐसे प्रमाणपत्र बनवाने वाले कुछ एजेंटों की मदद से कई पासपोर्ट आदि भी हासिल कर लेते हैं। ऐसे में उनकी पहचान कठिन हो जाती है। फिर हर देश की अपनी सीमा होती है। भारत में पहले ही जनसंख्या का भारी दबाव है, उस पर भारी संख्या में आ जुटे शरणार्थियों के लिए बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराना कठिन काम है। इसलिए भी सरकार की चिंता समझी जा सकती है। मगर बांग्लादेश बंटवारे के समय सीमा संबंधी कुछ उलझनें होने की वजह से वहां के बहुत सारे लोगों की नागरिकता को लेकर विवाद रहता है। ऐसे में इस कानून को अंतिम रूप देने से पहले इसके व्यावहारिक पहलुओं पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। एनआरसी के बाद बहुत सी चीजें सुरक्षा के लिहाज से बेहतर हो जायेंगीं, बस सरकार को ऐसे प्रबंध करने है कि घुसपैठिए देश में टिक न पाएं और हमारे नागरिक छूट ना जाएं।

कौन है इन मौतों का जिम्मेदार?

सुनील वर्मा

गाजियाबाद। गाजियाबाद के इंदिरापुरम में अपनी बेटी और बेटे की सोते समय हत्यार करने के बाद बिजनेसमैन गुलशन वासुदेवा की पत्नीब व प्रेमिका साथ खुदकुशी की घटना हमारे सामाजिक माने बाने पर कई सवाल खडे. करती है। इस लोमहर्षक घटना ने सामाजिक ही नहीं कारोबारी रिश्तोंन में दगाबाजी औ बदलते सामाजिक परिवेश पर भी कई सवाल खड़े किए है।

मूलतः दिल्ली के झिलमिल निवासी गुलशन उर्फ हरीश वासुदेवा इंदिरापुरम की कृष्णा अपरा सफायर सोसायटी में बेटे रितिक (13), बेटी कृतिका (18), पत्नी परमीना (43) और अपनी मैनेजर संजना (26) के साथ करीब दो माह से किराए के फ्लैट में रहते थे। उनका दिल्ली स्थित गांधी नगर में जींस का कारोबार था। 3 अक्टूबर की सुबह बेटा-बेटी की पहले खाने में नशीला पदार्थ मिलाकर बेहोशी में गला कारटकर हत्या

करने के बाद गुलशन ने परमीना और संजना के साथ आठवीं मंजिल पर स्थित फ्लैट संख्या ए-806 की बालकनी में कुर्सी लगाकर नीचे कूद कर आत्महत्या कर ली थी। फ्लैट की दीवार पर सुसाइड नोट लिखा था। इसमें सभी मौतों का जिम्मेदार साढू राकेश वर्मा को बताया था। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर राकेश वर्मा को जेल भेज दिया था।

इस घटना के कई पहलू है। कारोबार में रकम डूबने, देनदार द्वारा पैसा नहीं चुकाने और लोगों से लिए गए पैसे चुकता नहीं करने के कारण गुलशन व उसका परिवार काफी तनाव में था। परिवार आर्थिक रूप से काफी परेशान था इसी के चलते गुलशन ने यह कदम उठाया। अब तक की जांच में खुलासा हुआ है कि वह नहीं चाहता था कि उसकी मौत के बाद बच्चोंक या पत्नीर को कोई परेशानी हो इसलिए उन्होंनि बच्चों को मारकर खुदकुशी करने का प्लाान बनाया था।

गुलशन वासुदेवा की दिल्ली के गांधीनगर में जींस बनाने की फैक्टरी थी। साहिबाबाद के शालीमार गार्डन निवासी राकेश वर्मा गुलशन का साढू है। कुछ समय पहले उसने गुलशन से प्रॉपर्टी के कारोबार में निवेश करने को कहा था।

गुलशन ने उसे सवा करोड़ रुपये दिए थे। बदले में राकेश वर्मा ने 2015 में अपनी मां फूला वर्मा से शालीमार गार्डन स्थित कोठी का एग्रीमेंट गुलशन के करीबी सीए प्रवीण बख्शी के नाम करा दिया, लेकिन 2018 में उक्त कोठी 1.49 करोड़ रुपये में किसी और को बेच दी। गुलशन ने पैसे मांगे तो राकेश ने चेक दिए जो बाउंस हो गए। तगादा करने के बावजूद राकेश द्वारा पैसे नहीं लौटाने से गुलशन व उसका पूरा परिवार तनाव में था। इसी के बाद अचानक उन्होंने हत्या और आत्महत्या का ऐसा कदम उठाया कि सबलोग हैरान रह गए। राकेश वर्मा प्रॉपर्टी कारोबारी है और पंजाब में होटल भी चलाता था आर्थिक तंगी के कारण वहां भी घाटा उठाना पड रहा था।

करोड़ों के नुकसान तले दबा गुलशन कई वर्षों से घाटे से उबरने की जद्दोजहद में जुटा था। लेकिन कुछ दिन पहले कोलकाता की कंपनी में करीब 60 लाख रुपये डूबने का पता लगने पर बुरी तरह टूट गया और आखिरकार परिवार के खात्मे का फैसला ले लिया।

गुलशन के परिवार वालों के अनुसार, करीब सात वर्षों से गुलशन की मैनेजर संजना गुलशन के साथ थी। शुरूआत में तो वह फैक्ट्री में काम देखती थी बाद में उसकी गुलशन के साथ निकटता बढ गई और उसने उनके घर आना जाना शुरू कर दिया। कुछ समय बाद संजना गुलशन के घर में ही रहने लगी। दो महीने पहले गुलशन परिवार एटीएस सोसायटी से कृष्णा अपरा सफायर सोसायटी में शिफ्ट हुए। तब से संजना उनके साथ ही रह रही थी। लेकिन संजना का गुलशन से क्या रिश्ता था यह किसी को नहीं पता। हांलाकि संजना की मां नूरजहां ने बताया कि संजना को पैसा कमाना था। 26 वर्षीय संजना कई साल से गुलशन के यहां काम कर रही थी। करीब डेढ़ साल पहले संजना घर छोड़कर चली गई थी। इसके बाद उससे उनका कोई संपर्क नहीं रहा। लेकिन एक बात साफ है कि गुलशन की पत्नी परमीना को संजना व गुलशन के संबध स्वीरकार्य थे। क्योंकि किसी ने इस बात की शिकायत नहीं की है कि परमीना व गुलशन में संजना को लेकर कोई विवाद था। जाहिर है हत्यास और आत्मकहत्या के इस प्रकरण में से संबध कोई वजह नहीं हैं।

भाजपा ने घोषित किए 20 जिलाध्यक्षों के नाम, 19 जिलों का ऐलान अभी बाकी

गाजियाबाद में दिनेश सिंघल जिलाध्यक्ष और संजीव शर्मा बने महानगर अध्यक्ष

विशेष संवाददाता

लखनऊ / गाजियाबाद। भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश में शुक्रवार को 20 और जिलाध्यक्ष घोषित कर दिए हैं। पार्टी ने इससे पहले 59 जिलाध्यक्षों की सूची जारी की थी। कुल 98 जिलों में अब केवल 19 जिलों के अध्यक्ष घोषित होने बाकी रह जाएंगे। ज्यादातर जिलों में नए अध्यक्ष की नियुक्ति की गई है।

बीजेपी के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित ने बताया कि घोषित जिलाध्यक्षों में बाराबंकी में अवधेश श्रीवास्तव और रायबरेली में रामदेव पाल को जिलाध्यक्ष बनाया गया है। इनके अलावा मुजफ्फरनगर में विजय शुक्ला को, गाजियाबाद महानगर में संजीव शर्मा को, गाजियाबाद जिले में दिनेश सिंघल को अध्यक्ष बनाया गया है।

वहीं आवंला में वीरसिंह पाल, एटा में संदीप जैन, औरैया में श्रीराम मिश्रा, इटावा में अजय धाकरे, कन्नौज में नरेंद्र राजपूत, फरुर्खाबाद में रूपेश गुप्ता, गाजीपुर में भानु सिंह, जौनपुर में पुष्पराज सिंह, मछलीशहर में रामविलास पाल, प्रयागराज महानगर में गणेश केसरवानी, प्रयागराज यमुनापार में विश्वनाथ भारती, प्रयागराज गंगापार में अश्वनी दूबे, सोनभद्र में अजीत चौबे, देवरिया में अन्तयार्मी सिंह और कुशीनगर में प्रेमचंद मिश्रा को जिलाध्यक्ष बनाया गया है।

गाजियाबाद महानगर अध्यंक्ष पद हासिल करने के लिए सबसे ज्यावदा मारामारी थी। महानगर अध्यक्ष के लिए 11 और जिलाध्यक्ष के लिए 16 दावेदार मैदान में थे। महानगर अध्यक्ष पद के साथ प्रांतीय परिषद के लिए मानसिंह गोस्वामी, राजेश त्यागी, बॉबी त्यागी, लेखराज माहौर, राजीव अग्रवाल, केके शुक्ला, देवेंद्र अग्रवाल, संजीव शर्मा, पूर्व पार्षद संजीव शर्मा, अमित त्यागी, त्रिलोक सिंह, नवीन त्यागी, प्रेम त्यागी, प्रीति चंद्रा व सरदार सिंह भाटी ने नामांकन किया था। जिलाध्यक्ष के लिए वर्तमान जिलाध्यक्ष बसंत त्यागी, राजवेंद्र बैसला, हरिओम गुप्ता, स्वदेश जैन, अमित चौधरी, जयप्रकाश वशिष्ठ, दिनेश सिंघल, अनूप बैसला, पवन सिंघल, चमन पाल सिंह, सतपाल, बिजेंद्र त्यागी, राकेश त्यागी, सतपाल शर्मा, डीडी यादव, अजय गर्ग और ललित शर्मा ने नामांकन किया। दिलचस्प बात है कि महानगर और जिलाध्यक्ष की इससे पहले जारी की गई सूची से अंतिम वक्तर में गाजियाबाद का नाम रोक लिया गया था। जिससे कयास लगाए जा रहे थे कि दोनों पदों पर जबरदस्त खींचतान चल रही है।

सपा के जिलाध्यक्षों की पहली सूची में 'यादवों' का बोलबाला

गाजियाबाद में मुन्नी से लेकर राशिद को सौंपी गई कमान

विशेष संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश में मिशन- 2022 की तैयारी में लगी समाजवादी पार्टी अपने मूल वोट बैंक को जरा भी निराश करने की स्थिति में नहीं है। इसी कारण गुरुवार को पार्टी के जिलाध्यक्षों की पहली सूची में यादवों का बोलबाला रहा। इसके साथ ही अन्य पिछड़ा वर्ग को जोड़ने की कोशिश भी नजर आती है। 15 जिलों की इस सूची में नए चेहरों के साथ अनुभवी नेताओं को भी जिलों की जिम्मेदारी सौंपकर संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है। इन 15 में आठ जिलाध्यक्ष यादव हैं।

प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने गत दिनों सूची जारी की। जिसमें 15 जिलाध्यक्षों के साथ चार उपाध्यक्ष व एक जिला महामंत्री के नाम भी घोषित किया गया है। जिलाध्यक्षों में आधे से ज्यादा यादव समाज से है। बस्ती, औरेया, इटावा, लखनऊ, जालौन, उन्नाव, कानपुर ग्रामीण और गोंडा जिलों की कमान यादव नेताओं के हाथ में सौंपी गई है। दो मुस्लिम नेताओं को बुलंदशहर व गाजियाबाद जिलों में अध्यक्ष बनाया गया है। अन्य पिछड़ा वर्ग को साधने के लिए मैनपुरी में पाल, सहारनपुर में गुर्जर व बरेली जिले में मौर्य बिरादरी से जिलाध्यक्ष बनाया है। इसके

अलावा सवर्ण समाज को जोड़ने के लिए मुजफ्फरनगर में त्यागी ब्राह्मण और मथुरा में राजपूत समाज का जिलाध्यक्ष नामित किया गया है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर और गाजियाबाद की कमान इस बार नए लोगों को दी गई है। 21 साल से सपा में सक्रिय राशिद मलिक को गाजियाबाद जिले का नया अध्यक्ष बनाया गया है। अल्पं संख्येक समुदाय के राशिद की अपने समुदाय में गहरी पकड़ है। गाजियाबाद में अभी यह जिम्मेदारी सुरेंद्र कुमार मुन्नी निभा रहे थे। पहले इनसे लोकसभा का टिकट देने के बाद वापस लेकर सुरेश बंसल को दे दिया गया था। अब जिलाध्यक्ष का पद भी ले लिया गया है। फिलहाल, सुरेंद्र कुमार मुन्नी का कहना है कि यह राष्ट्रीय अध्यक्ष का फैसला है, जो उन्हें मान्य है। हालांकि, लोकसभा चुनाव के दौरान एक रैली में अखिलेश यादव ने ऐलान किया था कि सुरेंद्र कुमार मुन्नी को बड़ी जिम्मेदारी दी जाएगी।

माना जा रहा है कि राशिद के अध्यक्ष बनने से यूथ ब्रिगेड में जान आएगी, जबकि सीनियर नेता राष्ट्रीय अध्यक्ष के इस फैसले से खुश नजर नहीं आ रहे हैं। एक सीनियर नेता ने कहा कि गाजियाबाद में मेहनत करने के बाद ही रिजल्ट मिलेगा। अब देखना यह होगा कि नए जिलाध्यक्ष सीनियर नेताओं को अपने पक्ष में कितना कर पाते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक विनीतकांत पाराशर द्वारा भारद्वाज प्रिंटर्स, शॉप नं. 1, प्रिया सिनेमा मार्केट, मुरादनगर, गाजियाबाद से छपवाकर सैकेंड ए-288 नेहरूनगर, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश से प्रकाशित किया। संपादक विनीतकांत पाराशर, RNI: UPHIN/2017/74151 प्रशासनिक कार्यालय : ए-288 नेहरूनगर द्वितीय, गाजियाबाद।